आधुनिक भारतीय परिवेश में परम्परा एवं परिवर्तन

–डॉ. योगेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी
एसो.प्रो. एवं अध्यक्ष–समाजशास्त्र विभाग
का.सु. साकेत पी.जी. कालेज, अयोध्या

शोध सारांश

परिवर्तन की प्रक्रिया से दुनिया का कोई समाज अछूत नहीं रहा है, भारतीय सामाजिक व्यवस्था में भी समय के साथ अनेकानेक परिवर्तन हुए है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में छः दशक के पश्चात् कृषि के साथ उद्योगों में क्रान्ति देखी जा सकती है। आत्मनिर्भता, उत्पादकता, उद्यमशीलता में उत्तरोत्तर वृद्धि देखी जा सकती है। गाँव एव नगर के बीच दूरी कम होना, गाँव से एक बड़े वर्ग का पलायन तथा नगर और गाँव की संस्कृति का एक–दूसरे के साथ प्रसार कहीं न कहीं प्राचीन परम्परा में परिवर्तन को दृष्टिगत करता है। शिक्षा नीति मे परिवर्तन, रोजगार में वृद्धि, स्वास्थ्य की दिशा, बेहतर प्रयास, स्त्री–पुरूष असमानता जैसे विचारों में परिवर्तन कहीं न कही आधुनिक विचारों की देन कही जा सकती है। भारतीय समाज में अभी तक जो भी परिवर्तन हुए है, उनकी गति एवं दिशा में विविधता देखी जा सकती है। जीवन के विभिन्न रूपों में आधुनिकता का प्रभाव देखा जा सकता है, किन्तु आज भी अधिकांश परम्परागत आदर्शों का भी अनुपालन किया जा रहा है जिसकी वर्तमान समाज में कोई प्रासंगिता नहीं दिखाई पड़ती है।

शब्द संकेत – परम्परा, हस्तांतरण, आत्मज्ञान, अभिरूचि, लौकिकीकरण, अपवित्रता, बन्धुत्व, प्रक्रिया, नैतिकता, संक्रमण, संतुलन, शुचिता

भारतीय समाज आदिमकाल से लेकर वर्तमान काल तक एक सभ्यता के रूप में अनवरत गतिशील रहा है और आगे भी रहेगा। भारतीय समाज हमेशा परम्पराओं के साथ आगे बढ़ता रहा है, परम्परा किसी भी समाज के लिए ऐसा दर्पण होता है, जिसमें वर्तमान समाज अपने अतीत को परिवर्तित होते देखता है। परम्परा भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अंग के रूप में हमारे व्यवहार के स्वीकृत माध्यमों का परिचायक है। इन माध्यमों की निरन्तरता पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरिक होने वाली प्रक्रिया के रूप में विद्यमान रहती है। परम्परा वास्तविक रूप में अतीत की विरासत के रूप में मान्यता प्राप्त है। विरासत का यह हस्तांतरण मात्र कुछ पीढ़ी तक ही सीमित न होकर निरन्तर प्रवाहमान प्रक्रिया के रूप में गतिशील रहेगी।

भारत में परम्परात्मक समाज में श्रम विभाजन सामाजिक जीवन में सद्गुणों और जीवन

के उद्देश्यों पर आधारित था। जीवन स्थिर नहीं था, इसमें स्थिरता और परिवर्तन दोनों मुख्य विशेषताओं के रूप में पाये जाते थें। स्थिरता और परिवर्तन के सहअस्तित्व के कारण भारतीय समाज और संस्कृति में पीढ़ी–दर पीढ़ी सांस्कृतिक संश्लेषण और सांस्कृतिक विशेषताओं का संचरण होना सम्भव हो सका।(1) भारत के ऋषि–मुनि आत्मज्ञान को महत्व देते हैं। इसी आत्मज्ञान के माध्यम से देवत्व प्राप्त किया जा सकता है साथ ही आत्मा और परमात्मा की अभिन्नता के बारे में ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। स्वयं के भीतर झाँकने वाली इस आध्यात्मिकता की जड़ें भारत में है। भारतीय समाज की सांस्कृतिक विरासत बहुत समृद्ध है। इसीलिए हमारे समाज को अद्वितीय एवं विविधता पूर्ण सनातन समाज माना जाता है। जीवन के अनेक अद्भुत पक्षों और विलक्षणता के कारण ही हम विश्वगुरू रहे हैं। इस समृद्ध परम्पराओं को अब आधुनिकता के साथ वैज्ञानिक सोंच में परिवर्तित करने की आवश्यकता है।(2)

परम्परागत हिन्दू समाज धर्म को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करती हुई आगे बढ़ती रही है। इस हस्तांतरण की प्रक्रिया में परम्परा ने हिन्दू धर्म में बहुत कुछ जोड़ा है, कुछ छोड़ा है, कुछ परिवर्तित किया है तथा कुछ निखारा भी है। इस काल प्रवाह की धारा में परम्परा ने हिन्दू धर्म को आगे बढ़ाकर समय के साथ उसकी उपयोगिता को सिद्ध भी किया है। परम्परा ने ही हिन्दू धर्म को आज भी आवश्यकता के रूप में हमारे लिए यहाँ तक पहुँचाया है।

वास्तव में परम्परा परिवर्तन के माध्यम से ही गतिशीलता को प्राप्त करती है। जैसा कि परिवर्तन प्रकृति का आवश्यक नियम है। विश्व की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। वस्तु में परिवर्तन प्रत्येक क्षण होता रहता है, लेकिन सामान्य रूप से उसके स्थूल रूप को ही देख पाते है। वस्तुएँ एक दशा से दूसरी दशा में परिवर्तन के माध्यम से ही पहुँचाती है। परिवर्तन प्रत्येक तरह की गति और अन्य दूसरी प्रकार की क्रियाओं का एक अवस्था से दूसरी अवस्था में संक्रमण के लिए उत्तरदायी है।

किसी भी समाज में परिवर्तन तभी सम्भव होता है जब वह किसी नवीन कार्य को करने की विधियों को स्वीकार करने के प्रति अभिरूचि उत्पन्न की जाय। परम्पराओं से लगाव तथा नवीन विचारों की अस्वीकृति सामाजिक परिवर्तन में बाधा उत्पन्न करती है। सांस्कृतिक एकत्रीकरण की मात्रा तथा अन्य समाजों से सम्पूर्ण किसी भी समाज में सामाजिक परिवर्तन की सीमा निर्धारित करते है। सांस्कृतिक एकत्रीकरण की मात्रा के कारण आविष्कारों की सम्भावना तथा अन्य संस्कृतियों की नवीन विशेषताओं का प्रारम्भ सीमित हो जाता है जो इस बात पर निर्भर करता है कि परम्परा को त्यागने की तत्परता कितनी है। दूसरी संस्कृतियों के सर्म्पक में

आने से जो कुछ ज्ञात होता है वह विस्तारित हो जाता है, यही सामाजिक परिवर्तन का स्रोत होता है।[3]

सामाजिक परिवर्तन समाज के भीतर होने वाली एक प्रक्रिया है। सामाजिक परिवर्तन का आशय सामाजिक ढाँचे में होने वाले परिवर्तन अर्थात समाज के आकार इसके विभिन्न अंगों अथवा इसके संगठन के प्रकारों की बनावट एवं संतुलन में होने वाले परिवर्तन से होता है। सामाजिक परिवर्तन एक प्रकार का अभौतिक सांस्कृतिक परिवर्तन है जो प्राकृतिक, जैविकीय, जनसंख्यात्मक, आर्थिक और प्रौद्योगिकीय कारणों से सर्वाधिक प्रभावित होता है। गतिशील परम्परा परिवर्तन के कारण ही आधुनिकता को प्राप्त होती है और परिवर्तन के कारण ही आज की आधुनिकता कल के लिए परम्परा बन जाती है। यदि चलते हुए मनुष्य का आगे बढ़ने के लिए टिका हुआ पैर परम्परा है, तो उठा हुआ पैर आधुनिकता है।[4]

संरचना में परिवर्तन सरल संक्रमण की धीमी प्रक्रिया है, जो सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित नहीं करती। उद्विकासीय क्रम में होने वाले परिवर्तनों को भी संरचना में परिवर्तन के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है जैसे – छोटी आबादी एक गाँव में, एक गाँव एक कस्बे में एवं एक कस्बा एक नगर के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इन परिवर्तनों से श्रम विभाजन के नवीन स्वरूप का जन्म होता है साथ ही नई भूमिकाओं एवं सम्बन्धों के साथ ही उनका अस्तित्व में होना विभेदीकरण की प्रक्रिया में उभरता है। यह संरचना में परिवर्तन को स्पष्ट करता है। संरचना का परिवर्तन लम्बी अवधि तक होने वाला अलग प्रकृति का परिवर्तन है। यह परिवर्तन संरचना के प्राचीन स्वरूप को प्रतिस्थापित करके नई संरचना के स्वरूपों को स्थापित करता है।[5]

गतिशील परम्परा ही आधुनिकता को जन्म देती है। आधुनिकता आधुनिक' शब्द का भाववाचक रूप है, इस प्रकार आधुनिकता आधुनिक होने का भाव है। अर्थात आधुनिकता एक ऐसा दृष्टिकोण है जो मनुष्य की नियति को मात्र परम्परा से सम्बद्ध मानकर नये युग की परिस्थितियों के अनुसार परिभाषित करने का प्रयास करता है। आधुनिकता को अधिक स्पष्ट करने के लिए हमें आधुनिक शब्द के अर्थ को स्पष्ट करना आवश्यक है। आधुनिक शब्द का आशय है 'अधुना' या 'इस समय जो है, लेकिन आधुनिक का अर्थ यही नहीं, क्योंकि इस समय भी बहुत सी ऐसी चीजें है जो आधुनिक नहीं है। वह प्राचीन या मध्यकालीन है जैसे–इस समय भी ग्रामीण अंचल में बहुत से किसान अब भी प्राचीन काल से चले आ रहे हल–बैल से खेती करते है, जो आधुनिक नहीं बल्कि प्राचीन पद्धति कही जाती है। दूसरी ओर आधुनिक होने का

यह भी अर्थ नहीं है कि कोई आचार–विचार एकदम नया है, उसके मूल में पुराने संस्कार और नये अनुभव अवश्य ही समाहित होते हैं।[6]

लौकिकीकरण के आधार पर परम्परागत एवं आधुनिक समाजों में भेद किया जाता है। परम्परागत समाज में एक ही संस्था द्वारा विभिन्न कार्य किये किये जाते है साथ ही आधुनिक समाज में विभिन्न प्रकार्य उन्ही संस्थाओं के माध्यम से किये जाते है, जिनके लिए उन संस्थाओं का अस्तित्व है, लौकिकीकरण ने पवित्रता एवं अपवित्रता को प्रभावित किया है, इसी प्रकार इसमें पुरोहितों, ब्राह्मणों जाति, ग्रामीण समुदाय एवं संयुकत परिवार को भी प्रभावित किया है। पवित्र एवं अपवित्र की अवधारणा गन्दगी, कालुष्य तथा पाप से है जबकि पवित्र का अर्थ स्वच्छता, सुचिता तथा आध्यत्मिक गुणों से हैं। विभिन्न जातियों में संरचनात्मक दूरी का माप पवित्रता और अपवित्रता है। उच्च जाति सदैव पवित्र है उच्च जाति के लोग निम्न जाति के व्यक्ति के द्वारा बनाया गया भोजन भी स्वीकार नहीं करते है न ही उनके साथ विवाह अथवा यौन सम्बन्ध स्थापित करते। उच्च जाति के लोग कुछ नियमों की अवहेलना करते है तो वह अपवित्र हो जाती है।

पश्चिमीकरण के माध्यम से समाज में जो भी परिवर्तन आये है उनमे भारतीय परम्परागत जीवन में कोई सामंजस्य नहीं है। एक व्यक्ति कार का चालक भी हो सकता है, परन्तु कार को स्वच्छ करते हुए वह कार पर सिंदूर का प्रयोग आज भी करता है। दस्तकार अपने औजारों को त्योहारों के दिन साफ करता है, परन्तु वह सिंदूर लगाना नहीं भूलता। आज भी दशहरा के त्योहार पर अस्त्र–शस्त्र की पूजा की जाती है।

आधुनिकीकरण सिद्धान्त की मान्यता है कि समाजों का विकास कुछ निश्चित भविष्य कथनीय चरणों के अनुसरण करते हुए होता है तथा सरल समाज से उत्तरोत्तर जटिल समाज में उनका रूपान्तरण होता है। आधुनिकीकरण समाज ऐसी संस्थागत संरचनाओं के द्वारा ही संचालित होते है। जो आज की प्रक्रिया में निहित परिवर्तनों की निरन्तर आत्मसात करने की क्षमता रखती है। प्रो.एस.सी. दूबे ने आधुनिकीकरण को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''आधुनिकीकरण की प्रक्रिया एक आन्दोलन है जिसमें परम्परागत क्रम से निश्चित एच्छिक प्रौद्योगिकी की ओर अग्रसर होते हैं। सामाजिक संचरना मूल्य और नियमों से सम्बन्धित है, वह प्रक्रिया मुख्य रूप से आधुनिक, आर्थिक, प्रौद्योगिक, और विज्ञान के नये अन्वेषणों के मध्य सामंजस्य स्थापित करती है,'' आधुनिक समाज व्यक्तिगत जीवन के सम्पूर्ण पक्षों पर प्रत्येक दृष्टि से विचार करता है। इस प्रक्रिया में व्यक्तिगत स्तर, आर्थिक क्रियाकलापों,

सामाजिक कार्यक्रमों, छोटे पारिवारिक जीवन से उच्चतर सामाजिक जीवन में उन्नयन होता है।[7]

परम्परा एवं आधुनिकीकरण को प्रायः दो परस्पर विरोधी अवधारणा माना जाता है। परन्तु इसका यह आशय नहीं है कि आधुनिक समाज व परम्पराओं में कोई सम्बन्ध नही है, भारत परम्पराओं का देश माना जाता है, यहाँ विभिन्न सम्प्रदायों के लोग अपने–अपने धर्मों का पालन करते हुए अलग–अलग परम्पराओं का निवर्हन करते है, वास्तव में क्षेत्रियता के आधार पर भी भारत में परम्परा की विशेषताओं का विकास हुआ है। जैसे– संयुक्त परिवार बन्धुत्व पवित्रता, सांस्कृतिक रीति–रिवाज, अनुष्ठान आदि में भी परम्परा अपने व्यापक स्वरूप में दृष्टिगत होती है। परम्परा ऐसी संरचना है जिसका अपना इतिहास है, जिस पर उस क्षेत्र के विकास को आत्मसात करने का उत्तरदायित्व है। जिससे परम्परा स्वतः स्थापित रहे, आधुनिकता का आशय आधुनिक होने से है, परम्परा से आगे बढ़कर नये ज्ञान, तर्क और तकनीकी को ग्रहण करना ही आधुनिकता है। ऐसे समाज को दर्शाती है, जो कि अन्य समाजों की तुलना में अधिक विकसित है।[8]

भारत में आधुनिकीकरण संक्रमण की स्थिति से गुजर रहा है, यदि एक ओर आधुनिकीकरण की प्रक्रिया चल रही है तो दूसरी ओर इसकी विरोधी प्रक्रियाऐं भी चलती रहती है। विरोधी प्रक्रियाऐं मात्र आधुनिकीकरण की गति को ही मंद नहीं करती है बल्कि कभी–कभी कुछ लोगों को प्रतिक्रिया स्वरूप आधुनिकीकरण हीनता की ओर अग्रसर हो जाती है। वास्तव मे यदि हम वर्तमान भारतीय समाज का मूल्यांकन प्राचीन समाज की पृष्ठभूमि से करते है तो निश्चित रूप से परिवर्तन दिखाई पड़ता है, लेकिन यदि भारतीय समाज की तुलना विकसित देशों से की जाती है तो भारतीय सामाजिक संरचना एवं मूल्यों, परम्पराओं की तरह ही प्रतीत होते है। इससे यहीं स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज की स्थिति परम्पराओं और आधुनिक समाज के बीच नहीं स्थित है और वह धीरे–धीरे आधुनिकीकरण की ओर बढ़ रहा है। लेकिन भारत न तो कभी पश्चिमी देशों की सम्पूर्ण परिचर्या को अपना सकता है और न ही इस प्रकार की स्थिति उसके हित में होगी। भारत मे आधुनिकीकरण जिस तीव्रता के साथ आगे बढ़ रही है, उसकी उपलब्धि ही हीं जा सकती हैं।[9]

नये विचारों और परिवर्तन को बिना सोंचे –समझे स्वीकार करना आधुनिकता नहीं कही जा सकती है। किसी भी नये विचार एवं परिवर्तन को हमें ऊपरी सामाजिक आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक स्थिति पर विचार करने के पश्चात् ग्रहण करने से व्यक्ति और समाज दोनों ही इससे लाभान्वित होते हैं।

भारतीय समाज आधुनिक के नाम पर पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण करते हुए दिखाई पड़ता है, भौतिकता की अन्धी दौड़ में लोगों में नैतिकता और राष्ट्रीय चरित्र का पतन भी हुआ हैं।

संदर्भ–सूची

1. शर्मा, के0एल0, (2010) भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृष्ठ–42
2. शर्मा, जी0एल0, (2015) सामाजिक मुद्दे, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृष्ठ–11
3. आहूजा, राम : (2015) भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृष्ठ–360
4. मौर्य, श्याम वृक्ष : (2006) समाज, दर्शन और राजनीति, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ–123
5. यादव, राम गणेश एवं अन्य : (2014) भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास ओरियण्ट ब्लैक स्वान, नई दिल्ली, पृष्ठ–3
6. मौर्य, श्याम वृक्ष : (2006) समाज, दर्शन और राजनीति, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ–124
7. शर्मा, एस0एस0, (2007) : सामाजिक परिवर्तन, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, पृष्ठ–165
8. यादव, राम गणेश एवं अन्य : (2014) भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास ओरियण्ट ब्लैक स्वान, नई दिल्ली, पृष्ठ–95
9. मिश्र, समीरात्मज : (2011) निबन्ध मंजूषा, टाटा मैक्ग्राहिल एजूकेशन प्राइवेट लि0 नई दिल्ली, पृष्ठ–32

●